# ABILITY ENHANCEMENT COURSE

# (AEC)

# DEPARTMENT OF SANSKRIT

## ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

Department of Sanskrit

Soban singh jeena University, Almora

**ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)PREPARED FOR THE POOL OF COURSE**

| Semster | Paper Title in multi study –Sanskrit | Theory/ Practial/Practice | credits |
|---|---|---|---|
| I | संस्कृतभाषा एवं साहित्य | Theory/Practice | 2 |
| II | संस्कृतव्याकरण–संज्ञा | Theory/ Practice | 2 |
| III | संस्कृतव्याकरण–सन्धि एवं उपसर्ग परिचय | Theory/ Practice | 2 |
| IV | संस्कृतव्याकरण–कारक एवं प्रत्यय | Theory/ Practice | 2 |

## Department of Sanskrit

# ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| AEC- संस्कृतभाषा एवं साहित्य | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. भाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना।
2. भाषा के माध्यम से साहित्य का अवबोध कराना।
3. भाषा और साहित्य की विशेषताओं से अवगत कराना।
4. साहित्य सृजन के प्रति रुचि उत्पन्न कराना।
5. भाषा अध्ययन से भाषा की सुगम, संक्षिप्त और अर्थपूर्ण शब्दों के निर्माण में कुशलता प्राप्त कराना।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. भाषा का अध्ययन करने से भाषा की उत्पति एवं उसके विकास के कारणों की व्याख्या कर सकेगें ।
2. भाषा की परिभाषा से परिचित होगें।
3. साहित्य के अध्ययन से उसकी विधाओं से परिचय प्राप्त कर सकेगें।
4. वैदिक और लौकिक साहित्य की विशेषताओं से परिचित हो सकेगें।
5. भाषा और साहित्य के अध्ययन से अर्थपूर्ण शब्दों में निर्माण में कुशल बनेगें।

| Unit | Topic |
|---|---|
| Unit I | संस्कृत भाषा का स्वरुप एवं लिपिज्ञान।<br>संस्कृत वाक्य एवं पद रचना। वर्णोच्चारण प्रक्रिया एवं प्रकार । संख्या परिचय। |
| Unit II | संस्कृत साहित्य का सामान्य परिचय : भाग–01 वैदिक संस्कृत ।<br>: भाग–02 लौकिक संस्कृत । |

**Suggested Reading:**


1– रचनानुवादकौमुदी–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

2–संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ0 बलदेव उपाध्याय एवं डॉ0 जगन्नाथ पाठक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

3–संस्कृत साहित्य का सरल इतिहास– डॉ0 पाठक एवं डॉ0 सीरौटिया, युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।

4–आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ0 बलदेव उपाध्याय एवं डॉ0 जगन्नाथ पाठक,उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।

5–अर्वाचीन संस्कृत साहित्य– डॉ0 श्रीधर भास्कर वर्णेकर, मॉडन बुक, स्टोर्स अकोला नागपुर।

6–संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास (चार भाग में)– डॉ0 राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली।

7– भाषा एवं भाषा विज्ञान : एक दृष्टि– शारदा चतुर्वेदी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली।

8– भाषाविज्ञान– श्री भगवान तिवारी, न्यू भारतीय बुक कार्पोरेशन, नई दिल्ली।


Note :

Examination: Subject to University' directions

## Department of Sanskrit

# ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| **AEC-**<br>**संस्कृतव्याकरण–संज्ञा** | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।
6. संस्कृतसम्भाषण से विद्याार्थियों की वाक्शक्ति का विकास होगा।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।
6. संस्कृतसम्भाषण से विद्याार्थियों की वाक्शक्ति का विकास होगा।

| Unit | Topic |
|---|---|
| **Unit I** | लघुसिद्धान्तकौमुदी के अनुसार माहेश्वरसूत्र, प्रत्याहार एवं स्वरभेद, उच्चारणस्थान एवं प्रयत्न। सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक कार्य। |
| **Unit II** | परिभाषा–इत्, लोप, उदात, अनुदात, स्वरित, अनुनासिक, सवर्ण, पद, संयोग, संहिता, दीर्घ, गुण, यण्, प्रगृह्य, वृद्धि, टि, उपधा, प्रातिपदिक, संप्रसारण, निष्ठा, आदि। |

**Suggested Reading:**


1–प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी–35वॉ संस्करण 2014।

2– प्रौढ रचनानुवादकौमुदी–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। 7वॉ संस्करण 1991।

3– संस्कृत भाषा–डॉ0 भवानी दत्त काण्डपाल, डॉ0 हेमवती न0 पनेरु तथा डॉ0 हेमन्त जोशी–अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।

4– लघुसिद्धान्तकौमुदी–धरानन्द शास्त्री(व्या0), मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

5– बृहद् अनुवाद चन्द्रिका– चक्रधर नौटियाल हंस, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

6–भाषा प्रवेशः–प्रथमः भागः सम्पादकाः–डॉ0 चाँदकिरण सलूजा, डॉ0 विश्वास, गिरिश चन्द्र तिवारी–संस्कृतभारती नवदेहली।


Note :

Examination: Subject to University' directions

## Department of Sanskrit

# ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| AEC- संस्कृतव्याकरण–सन्धि एवं उपसर्ग परिचय | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।

| Unit | Topic |
|---|---|
| Unit I | सन्धि परिचय, सन्धि भेद एवं उपयोगिता, सन्धिप्रकरण–अच् सन्धि–दीर्घ, गुण, यण्, वृद्धि, अयादि, पूर्वरूप एवं पररूप सन्धि। |
| Unit II | हल् सन्धि–श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व,, चर्त्व, अनुस्वार, लत्व सन्धि, विसर्ग सन्धि एवं उपसर्ग परिचय। |

**Suggested Reading:**


1– रचनानुवादकौमुदी–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

2– प्रौढरचनानुवादकौमुदी–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

3– संस्कृत भाषा–अंकित प्रकाशन, हल्द्वानी।

4– लघुसिद्धान्तकौमुदी–धरानन्द शास्त्री(व्या0), मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

5– बृहद् अनुवाद चन्द्रिका–चक्रधर नौटियाल हंस, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

6– भाषा प्रवेशः–प्रथमः भागः सम्पादकाः– डॉ0 चाँदकिरण सलूजा, डॉ0 विश्वास, गिरिश चन्द्र तिवारी–संस्कृतभारती नवदेहली।

7– वाच्य परिवर्तन–डॉ0 मधुर लता द्विवेदी– युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।

8– संस्कृतस्वाध्यायः प्रथमा दीक्षा– सम्भाषणम्–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली।

9– संस्कृतस्वाध्यायः प्रथमा दीक्षा–वाक्यव्यवहारः–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली।

10– संस्कृतस्वाध्यायःप्रथम दीक्षा–वाक्यविस्तरः–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,नव देहली।

11– प्रारम्भिक संस्कृत वाक्य संग्रह–सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्, वाराणसी।


Note :

Examination: Subject to University' directions

## Department of Sanskrit

# ABILITY ENHANCEMENT COURSE (AEC)

**No. of Hours-30**

### CREDIT DISTRIBUTION, ELIGIBILITY AND PRE-REQUISTES OF THE COURSE

| Course Title | Credits | Credit distribution 0f the course | | | Eligibility criteria | Pre-requisite of the course (if any) |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Lecture | Tutorial | Practical/Practice | | |
| AEC- संस्कृतव्याकरण–कारक एवं प्रत्यय | 2 | 1 | 0 | 1 | Pass in XII | Nil |

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।

**अध्ययन की उपलब्धि**

1. संस्कृतभाषा का अध्ययन करने से विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति रूचि उत्पन्न हो सकेंगी।
2. संस्कृतभाषा को स्नातक–कलावर्ग के अतिरिक्त वाणिज्य एवं विज्ञानवर्ग के विद्यार्थी भी पढ़ सकते हैं।
3. संस्कृतभाषा के ज्ञान से नैतिकमूल्यों, आध्यात्मिकमूल्यों से युक्त ग्रन्थों के अध्ययन में सुगमता प्राप्त होगी।
4. मूल्यपरक ग्रन्थों के बोध से अपने जीवन का लक्ष्य पूर्ण करने समर्थ होगें।
5. संस्कृतभाषा के अध्ययन से विद्यार्थी अन्य भाषा के स्रोत को सरलता से समझ सकते हैं।

| Unit | Topic |
|---|---|
| Unit I | कारक परिचय– कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान एवं अधिकरण परिचय एवं प्रयोग, प्रत्यय प्रकरण– सुबन्त, तिङन्त एवं स्त्रीप्रत्यय परिचय एवं प्रयोग। |
| Unit II | कृत्प्रत्यय–क्त्वा, तुमुन्, यत्, क्त, क्तवतु, ल्यप्, शतृ, शानच्, तव्यत्, अनीयर्, प्रयोग सहित। |

**Suggested Reading:**


1– रचनानुवादकौमुदी–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2– प्रौढ रचनानुवादकौमुदी–डॉ0 कपिलदेव द्विवेदी, भैरवनाथ विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3– संस्कृत भाषा–अंकित प्रकाशन, एवं हल्द्वानी।
4– लघुसिद्धान्तकौमुदी–धरानन्द शास्त्री(व्या0), मूल एवं हिन्दी व्याख्या, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
5– बृहद् अनुवाद चन्द्रिका– चक्रधर नौटियाल हंस, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
6– भाषाप्रवेशः–प्रथमः भागः सम्पादकाः–डॉ0 चाँदकिरण सलूजा, डॉ0 विश्वास, गिरिश चन्द्र तिवारी–संस्कृतभारती नवदेहली।
7– वाच्य परिवर्तन–डॉ0 मधुर लता द्विवेदी– युवराज पब्लिकेशन्स, आगरा।
8– संस्कृतस्वाध्यायः प्रथमा दीक्षा–सम्भाषणम्–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली।
9– संस्कृतस्वाध्यायः प्रथमा दीक्षा–वाक्यव्यवहारः–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नव देहली।
10– संस्कृतस्वाध्यायःप्रथम दीक्षा–वाक्यविस्तरः–वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान,नव देहली।
11– प्रारम्भिक संस्कृत वाक्य संग्रह–सार्वभौम संस्कृत प्रचार संस्थानम्, वाराणसी।


Note :

Examination: Subject to University' directions

----------**0**----------